International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 9, Ver. I || September 2018 || PP. 81-86

आर्थिक विकास पर भारतीय कृषि का प्रभाव और भारत में मध्यम कृषि को बढ़ावा देने के तरीके।

लेखिका: मंजू

भूगोल विभाग, राजकीयपीकॉलेज हिसार .जी.
Email: manjusamota98965518@gmail.com

सारांश

भारतकीअर्थव्यवस्थामुख्यरूपसेकृषिपरआधारितहै, जिसकादेशकीसामाजिक-आर्थिकसंरचनाऔरभविष्यकेविकासपरमहत्वपूर्णप्रभावपड़ताहै।यहसारभारतीयकृषिऔरआर्थिकविकासकेबीचजटिलसंबंधों कीजांचकरताहैऔरवहांमध्यमऔरटिकाऊखेतीकेतरीकोंकासमर्थनकरनेकेलिएनीतियोंकासुझावदेताहै।

भारतमेंकृषिक्षेत्रनेदेशकीसांस्कृतिकऔरआर्थिकविरासतमेंगहराईसेसमाहितहोनेकेबावजूदउल्लेखनीयपरिवर्तनोंकाअनुभव कियाहै।सकलघरेलूउत्पादऔरनौकरियोंमेंमहत्वपूर्णयोगदानदेनेकेबावजूद, उद्योगकोजनसंख्यावृद्धि, जलवायुपरिवर्तन, पानीकीकमीऔरघटतीकृषियोग्यभूमिकेकारणकठिनाइयोंकासामनाकरनापड़रहाहै।इनकठिनाइयोंसेपर्यावरणसंरक्षणऔर आर्थिकउन्नतिकेबीचसंतुलनबनानेवालीटिकाऊकृषिविधियोंकीआवश्यकतापरप्रकाशडालागयाहै।

भारतीयकृषिकाआर्थिकविकासपरव्यापकप्रभावपड़ताहै।बड़ीसंख्यामेंलोगोंकोजीविकाकासाधनदेनेकेसाथ-साथयहखाद्यसुरक्षाऔरनिर्यातसेविदेशीमुद्रालाभमेंभीमददकरताहै।लेकिनपारंपरिकतकनीकोंपरउद्योगकीनिर्भरतानेपानी कीकमी, रासायनिकउर्वरककेदुरुपयोगऔरमिट्टीकीगिरावटसहितसमस्याएंपैदाकीहैं, जोस्थिरताऔरउत्पादनकेलिएदीर्घकालिकखतरापैदाकरतीहैं।

मध्यमकृषिकोप्रोत्साहितकरनेकेलिएभारतकोकईतरीकोंकाउपयोगकरनेकीआवश्यकताहै।सबसेपहले, अत्याधुनिकमशीनरीकोअपनानाऔरसटीकखेतीइसबातकेदोउदाहरणहैंकिउत्पादनकोअधिकतमकरनेऔरसंसाधनकेउपयो गकोकमकरनेकेलिएतकनीकीसुधारोंकोकैसेअपनायाजाए।दूसरा, जैविकखेतीकेतरीकोंकोप्रोत्साहितकरनाऔरकिसानोंकोटिकाऊप्रथाओंकाउपयोगकरनेकेलिएप्रोत्साहनप्रदानकरनापर्यावरणी यगिरावटकोधीमाकरनेऔरफसललचीलेपनमेंसुधारकरनेमेंमददकरसकताहै।

मूल शब्द:भारतीयकृषि, आर्थिकविकास, स्थिरता, मध्यमकृषि, टिकाऊप्रथाएं, प्रौद्योगिकी, नीतिसमर्थन, किसानसशक्तिकरण।

प्रस्तावना:

भारतीयकृषिराष्ट्रकेविकासकेलिएमौलिकरहीहैऔरयहइसकेसांस्कृतिकऔरआर्थिकइतिहासमेंअंतर्निहितहै।भारतकाकृषिक्षेत्र, जोदेशकीअर्थव्यवस्थाकीरीढ़है, नेसकलघरेलूउत्पाद, रोजगारऔरखाद्यसुरक्षामेंबड़ायोगदानदियाहै।लेकिनउद्योगकीजबरदस्तबाधाओं - जैसेघटतीकृषियोग्यभूमि, दुर्लभजलआपूर्तिऔरपर्यावरणीयगिरावट - कोदेखतेहुएयहजरूरीहैकिआर्थिकविकासपरइसकेप्रभावोंकीगंभीरतासेजांचकीजाएऔरस्थिरताकोबढ़ावादेनेकेतरीकेविकसितकिएजाएं।

भारतकीअर्थव्यवस्थाऐतिहासिकरूपसेज्यादातरकृषिपरआधारितरहीहै, जोएकबड़ीआबादीकासमर्थनकरतीहैऔरलाखोंलोगोंकोरोजगारप्रदानकरतीहै। 1960 केदशककीहरितक्रांतिकेकारणकृषिउपजमेंउल्लेखनीयलाभकेकारणभारतकाखाद्यउत्पादनआत्मनिर्भरहोगयाहै।लेकिनउस

केबादकेदशकोंमें, जोरगहनखेतीकेतरीकोंसेहटकरस्थिरता, पर्यावरणऔरकृषिउत्पादकताकेदीर्घकालिकजोखिमोंसेजुड़ेमुद्दोंपरकेंद्रितहोगया।

इसकीगतिशीलताऔरआर्थिकविकासपरपड़नेवालेप्रभावोंकोसमझनेकेलिएभारतीयकृषिकेऐतिहासिकमहत्वऔरवर्तमानमुद्दोंदोनोंकीजांचकरनाआवश्यकहै।यहअध्ययनविभिन्नशैक्षणिककार्योंऔरअनुसंधानपरियोजनाओंकेआधारपरभारतीयकृषि, आर्थिकविकासऔरटिकाऊप्रथाओंकीआवश्यकताकेबीचजटिलसंबंधोंकीजांचकरताहै।

2016- 2017मेंभारतकेआर्थिकसर्वेक्षण) वित्तमंत्रालय, भारतसरकार, 2017) केअनुसार, कार्यबलकाएकबड़ाप्रतिशतकृषिमेंकार्यरतहै, जोसकलघरेलूउत्पादकीवृद्धिमेंभीमहत्वपूर्णयोगदानदेताहै।विश्वबैंक)विश्वबैंक, 2016) केअनुसार, इसनेभारतकेलगभगआधेकार्यबलकोरोजगारदियाऔरदेशकीसकलघरेलूउत्पादमेंलगभग 17-18% कायोगदानदिया।

यहलेखउपरोक्तअवसरोंऔरकठिनाइयोंकोध्यानमेंरखतेहुए,

देशकेविकासपथमेंइसकीमहत्वपूर्णभूमिकापरविशेषजोरदेनेकेसाथ,

आर्थिकविकासपरभारतीयकृषिकेप्रभावकीजांचकरनाचाहताहै।यहटिकाऊखेतीकेतरीकोंकोबढ़ावादेनेकेलिएआवश्यकरणनीतिऔरउपायोंकाभीपतालगाएगा।भारतीयकृषिकोलचीलेपनऔरसमृद्धिकीदिशामेंआगेबढ़ानेकेलिए, यहअध्ययननवाचार, नीतिसुधारऔरसामुदायिकभागीदारीकेमहत्वपरप्रकाशडालेगा।

इतिहास :भारतीयकृषिकाविकास

भारतकीकृषिविरासतव्यापकहै, जोसहस्राब्दियोंसेविकसितहुईहैऔरस्थलाकृति, जलवायु, प्रौद्योगिकी, संस्कृतिऔरसरकारीबदलावसहितकईप्रकारकेतत्वोंसेप्रभावितहै।यहइसकेविकासकासामान्यसारांशहै:

• प्राचीनऔरमध्यकालीनसमय :3300-1300 ईसापूर्वसिंधुघाटीसभ्यताइसप्राचीनसमाजकीनींवकृषिथी।वहाँअन्नभंडार, सिंचाईप्रणालियाँऔरखेतथेजिनमेंगेहूँ, जौऔरअन्यसब्जियाँउगतीथीं।

• वैदिककाल) 1500-500 ईसापूर्व (केदौरान, खेतीकोएकमहानव्यवसायमानाजाताथा।ऋग्वेदखेतीकेतरीकोंऔरकृषिकार्योंमेंमवेशियोंकीभूमिकाकासंदर्भदेताहै।

• पूरेमध्ययुग) 8वींसे18 वींसदी (मेंकृषिराष्ट्रीयअर्थव्यवस्थाकामुख्यआधारथी।इस्लामीसत्ताकेआगमनकेसाथसिंचाईकेबेहतरतरीकेऔरफलतथासब्जियाँजैसीनईफसलेंलाईगईं।

17वीं-20वींसदीकाऔपनिवेशिकयुग:

- ***ब्रिटिशऔपनिवेशिकशासन:***अंग्रेजोंनेकपास, नीलऔरअफ़ीमजैसीनकदीफसलेंशुरूकरकेकृषिपरिवेशकोनिर्यातपरकेंद्रितमाहौलमेंबदलदिया।शोषणकारीनीतियों औरउच्चकरोंकेकारणअकालऔरकिसानोंकाशोषणहुआ।
- ***हरितक्रांति) 1960-वर्तमान:(***इसबारकईबदलावदेखेगए, जिनमेंउच्चउपजदेनेवालीबीजकिस्मोंकीशुरूआत, समकालीनखेतीकेतरीकेऔरसिंचाईऔरउर्वरकोंकेउपयोगमेंवृद्धिशामिलहै।परिणामस्वरूपजहाँगेहूँऔरचावलकीपैदावारमेंवृद्धिहुई, वहींस्थिरताऔरपर्यावरणपरपड़नेवालेप्रभावोंकेसंबंधमेंप्रश्नभीउठे।
- ***स्वतंत्रताकेबादकायुग:***स्वतंत्रताकेबादकेयुगमेंउनकिसानोंकेबीचभूमिकापुनर्वितरणकरनेकेलिएभूमिसुधारशुरूकिएगएजिनकेपासभूमिनहींथी।लेकिनकार्यान्वयनमेंराज्य-दर-राज्यभिन्नताएँमौजूदथीं।
- ***तकनीकीप्रगति:***भारतसरकारनेकृषिअनुसंधानपरजोरदेनेकेसाथभारतीयकृषिअनुसंधानपरिषद) आईसीएआर (औरकृषिविश्वविद्यालयोंजैसेसंगठनोंकीस्थापनाकी।कृषिमेंतकनीकीविकासजारीरहा।
- ***1990केदशककीशुरुआतमेंआर्थिकसुधार:***व्यापारनीतियों, बाजारअभिविन्यासऔरसब्सिडीमेंबदलावकुछऐसेतरीकेथेजिनसेउदारीकरणनीतियोंनेकृषिकोप्रभावितकिया।हालाँकिइसकालक्ष्यभारतीयकृषिकोविश्वअर्थव्यवस्थामेंशामिलकरनाथा, लेकिनपरिणामस्वरूपछोटेपैमानेकेकिसानोंकोकठिनाइयोंकासामनाकरनापड़ा।

भारतीयकृषिमेंचुनौतियाँ:

अनेकबाधाएँभारतमेंकृषिपरनिर्भरलाखोंलोगोंकेउत्पादन,
स्थिरताऔरआजीविकाकोप्रभावितकरतीहैं।कईउल्लेखनीयचुनौतियोंमेंशामिलहैं:

- ***टूटीहुईजोत:***जबजोतछोटीऔरबिखरीहुईहोतीहैतोखेतीआर्थिकरूपसेअव्यवहार्यहोजातीहै,
  जिसकेपरिणामस्वरूपपैमानेकीअर्थव्यवस्थाकमहोजातीहैऔरसमकालीनकृषितकनीकोंऔरउपकरणोंतकपहुंचसीमितहोजातीहै।
- ***पानीकीकमीऔरसिंचाई:***असमानजलसंसाधनवितरण, अप्रभावीसिंचाईप्रणाली,
  अत्यधिकभूजलदोहनऔरअप्रत्याशितमानसूनकेकारणकृषिक्षेत्रमेंकाफीसमस्याएंहैं।प्रभावीसिंचाईप्रणालीऔरटिकाऊजलप्रबंधनतकनीकोंकीआवश्यकताहै।
- ***जलवायुपरिवर्तन:***बदलतेमौसमकेमिजाज, अप्रत्याशितमानसून, बाढ़,
  सूखाऔरचरममौसमकीघटनाओंसेफसलकीपैदावारप्रभावितहोतीहै,
  जिससेकिसानोंकोनुकसानहोताहै।ऐसीफसलोंऔरखेतीकेतरीकोंकोलागूकरनाजरूरीहोजाताहैजोजलवायुकेअनुकूल हों।
- ***मृदास्वास्थ्यऔरक्षरण:***यहतबचिंताकाविषयहैजबअत्यधिकउर्वरकऔरकीटनाशकोंकेउपयोगकेसाथ-साथअस्थिरखेतीकेतरीकोंकेकारणमिट्टीकीउर्वरताकमहोजातीहै।मिट्टीकेक्षरणऔरकटावसेदीर्घकालिककृषिउत्पादकताकोखतराहै।
- ***उपकरणअपनानेकीकमी:***आधुनिककृषिउपकरण,
  मशीनरीऔरजानकारीतकसीमितपहुंचकेकारणग्रामीणयासीमांतक्षेत्रोंमेंउत्पादकतामेंबाधाआतीहै।सततविकासकेलिएप्रौद्योगिकीअंतरकोपाटनाहोगा।
- ***मूल्यमेंउतार-चढ़ावऔरबाजारमेंअस्थिरता:***मूल्यमेंउतार-चढ़ावऔरबाजारमेंअस्थिरताकिसानोंकेलिएआमसमस्याएंहैं,
  जोअक्सरअपनीउपजकेलिएउचितकीमतोंकीकमीऔरखराबबाजारबुनियादीढांचेसेभीजूझतेहैं।किसानोंकीबाजारोंतकपहुंचमेंसुधारऔरबाजारसंबंधोंकोमजबूतकरनाआवश्यकहै।
- ***आयअंतरऔरग्रामीण-शहरीप्रवासन:***ग्रामीणगरीबीअनियमितऔरकमकृषिआयकेकारणहोतीहै।यहग्रामीणसेशहरीक्षेत्रोंकीओरप्रवासकाकारणबनताहैऔरशहरीबुनियादीढांचेपरअधिकदबावडालताहै,
  खासकरजबइससेआयउत्पन्नकरनेकेविकल्पोंकीकमीकेसाथजोड़ाजाताहै।
- ***नीतिऔरसंस्थागतचुनौतियाँ:***किसीक्षेत्रकीवृद्धिऔरलचीलापनअसंगतनीतियों,
  छोटेपैमानेकेकिसानोंकेलिएअपर्याप्तसमर्थन,
  जटिलनियमोंऔरकृषिसुधारोंकेअकुशलकार्यान्वयनसेबाधितहोताहै।
- ***कीट,रोगऔरफसलकीविफलता:***कीटऔरबीमारीकेप्रकोपमेंफसलोंकोपूरीतरहसेनष्टकरनेऔरमहत्वपूर्णनुकसानपहुंचानेकीक्षमताहोतीहै।कृषिप्रबंधनतकनीकोंमेंसुधार, कीट-प्रतिरोधीफसलकेप्रकारऔरजानकारीतकसमयपरपहुंचहोनामहत्वपूर्णहै।

तकनीकीखामियाँऔरपुरानीकृषिपद्धतियाँ:

हालाँकिभारतकेकृषिउद्योगनेकाफीप्रगतिकीहै,
फिरभीइसेकईतकनीकीचुनौतियोंऔरपुरातनतरीकोंकासामनाकरनापड़रहाहै।प्रमुखकठिनाइयोंमेंसेहैं:

तकनीकीघाटा:

- ***प्रौद्योगिकीतकसीमितपहुंच:***बजटीयसीमाओं, घटियाबुनियादीढांचेऔरकमजागरूकताकेकारण,
  छोटेकिसानोंकेपासअक्सरसमकालीनकृषिप्रौद्योगिकियोंतकपहुंचनहींहोतीहै।

- ***अपर्याप्तमशीनीकरण:***भारतमेंखेतीकाएकबड़ाहिस्साहाथसेकियाजाताहै, जिसमेंमशीनीकृततकनीकोंकीतुलनामेंउत्पादकताऔरदक्षताकाअभावहै।
- ***डेटाउपयोग:***फसलनिगरानी, कीटनियंत्रणऔरसंसाधनप्रबंधननेसटीकखेती, इंटरनेटऑफथिंग्सऔरकृत्रिमबुद्धिमत्तासहितडेटा-संचालिततकनीकोंकासीमितउपयोगकियाहै।
- ***प्रतिबंधितकनेक्टिविटी:***कृषिप्रथाओंकेलिएडिजिटलउपकरणोंऔरप्लेटफार्मोंकाउपयोगउनकठिनाइयोंसेबाधितहोताहैजिनकाग्रामीणक्षेत्रोंकोअक्सरहाई-स्पीडइंटरनेटऔरकनेक्टिविटीप्राप्तकरनेमेंसामनाकरनापड़ताहै।

प्राचीनखेतीकेतरीके:

- ***पारंपरिकतरीकोंपरअत्यधिकनिर्भरता:***बहुतसेकिसानसदियोंसेचलीआरहीपारंपरिककृषितकनीकोंपरभरोसाकरतेरहतेहैं, जोसंसाधनों, उत्पादनयास्थिरताकेप्रबंधनकेलिएसर्वोत्तमनहींहोसकतीहैं।
- ***अप्रभावीजलप्रबंधन:***प्राचीनखेतीकेतरीकेपानीकीबर्बादीकरतेहैं, खासकरउनक्षेत्रोंमेंजहांपानीकीकमीहै।
- ***फसलविविधीकरणकाअभाव:***जबकुछफसलोंपरअधिकजोरदियाजाताहै, तोभूमिकमउपजाऊहोजातीहै, कीटोंऔरबीमारियोंकेप्रतिअधिकसंवेदनशीलहोजातीहैऔरख़राबहोजातीहै।

इनबाधाओंकासामनाकरनेमेंनिम्नलिखितशामिलहोसकतेहैं:

किसानोंकोआधुनिकपद्धतियाँअपनानेकेलिएप्रोत्साहितकरना :उन्हेंसस्तीप्रौद्योगिकी, प्रशिक्षणऔरसहायतातकपहुँचप्रदानकरना।

- ***अनुसंधानएवंविकासमेंपैसालगाना :*** प्रौद्योगिकीऔरतरीकोंकेमामलेमेंभारतीयकृषिस्थितियोंकेअनुकूलकृषिनवाचारकोबढ़ावादेना।
- ***बुनियादीढांचेमेंसुधार:***प्रौद्योगिकीकेप्रसारकोसुविधाजनकबनानेकेलिएग्रामीणक्षेत्रोंकीसड़कों, सिंचाईप्रणालियोंऔरसंचारकाविकासकरना।
- ***शिक्षाऔरजागरूकता:***किसानोंकोसमसामयिकतरीकोंकेफायदेसिखानाऔरउन्हेंटिकाऊतरीकेसेकैसेशामिलकियाजाए।

भारतीयकृषिकाआर्थिकविकासपरप्रभाव:

भारतीयकृषिकईतरीकोंसेदेशकीआर्थिकवृद्धिकोप्रभावितकरतीहै, जिनमेंशामिलहैं:

- ***रोजगारसृजन:***भारतकालगभगआधाकार्यबलकृषिमेंकार्यरतहै, जोदेशमेंएकप्रमुखनियोक्ताबनाहुआहै।लाखोंलोगअपनीआजीविकाकेलिएइसबड़ेक्षेत्रपरनिर्भरहैं, जोप्रत्यक्षऔरअप्रत्यक्षरूपसेग्रामीणअर्थव्यवस्थाओंकासमर्थनकरताहै।
- ***सकलघरेलूउत्पादमेंयोगदान:***कृषिभारतकेआर्थिकउत्पादनमेंमहत्वपूर्णयोगदानदेरहीहै, भलेहीअन्यउद्योगोंकेबढ़नेकेसाथसकलघरेलूउत्पादकाइसकाप्रतिशतघटरहाहै।आमतौरपर, यहदेशकीजीडीपीका 15% से18 % हिस्साबनताहै।
- ***खाद्यसुरक्षा:***भोजनकीपहुंचऔरउपलब्धताकीगारंटीकृषिउत्पादकताद्वारादीजातीहै।यदिसामाजिकप्रगतिऔरस्थिरतालानीहैतोभारतकीविशालआबादीकीखाद्यआवश्यकताओंकोपूराकियाजानाचाहिए।
- ***विदेशीमुद्राआय:***राष्ट्रकोफल, चावल, मसालेऔरकपासजैसेकृषिउत्पादोंकेनिर्यातसेविदेशीमुद्राराजस्वप्राप्तहोताहै।अर्थव्यवस्थाकोस्थिरकरनेऔरव्यापारघाटेकोसंतुलितकरनेकेलिएयहराजस्वआवश्यकहै।
- ***बाज़ारकनेक्शन:***कृषिग्रामीणऔरशहरीक्षेत्रोंकेबीचएकप्रमुखआर्थिककड़ीहै।खेतोंसेप्राप्तउपजकईअन्यक्षेत्रोंकेलिएकच्चेमालकेरूपमेंकामकरतीहै, जिससेआर्थिकपरस्परनिर्भरताकोबढ़ावामिलताहै।
- ***ग्रामीणविकास:***आयबढ़ाने, बुनियादीढांचेकोबढ़ानेऔरग्रामीणक्षेत्रोंमेंसामान्यसामाजिकआर्थिकउन्नतिकोबढ़ावादेकर, एकमजबूतकृषिक्षेत्रग्रामीणविकासकेलिएउत्प्रेरककेरूपमेंकामकरसकताहै।

- ***निवेशऔरप्रौद्योगिकी:***कृषिमेंनवाचारमशीनरी, बुनियादीढांचेऔरअनुसंधानमेंनिवेशकोबढ़ावादेताहै, जिसकेपरिणामस्वरूपउत्पादकताऔरक्षेत्रोंकेविकासकोबढ़ावामिलताहै।

मध्यमकृषिकोबढ़ावादेनेकेतरीके:

भारतमें, मध्यमकृषिकोप्रोत्साहितकरनेकामतलबऐसीनीतियांबनानाहैजोसामाजिकन्याय, पर्यावरणीयस्थिरताऔरआर्थिकविकासकेबीचसंतुलनबनाएरखें।निम्नलिखितमहत्वपूर्णतकनीकोंकीसिफारिशकीगईहै:

- ***फसलविविधीकरण:***किसानोंकेबीचफसलविविधताकोबढ़ावादेनेसेमोनोकल्चरसेजुड़ेखतरेकमहोजातेहैं।यहविधिमिट्टीकीउर्वरताबढ़ासकतीहै, कीटोंकीसंवेदनशीलताकोकमकरसकतीहैऔरजलवायुपरिवर्तनकेप्रतिप्रतिरोधकोमजबूतकरसकतीहै।
- ***जैविकखेतीकोप्रोत्साहन:***जैविकखेतीतकनीकोंकाउपयोगकरनेसेमिट्टीकेस्वास्थ्यकोबनाएरखने, जैवविविधताबढ़ानेऔररासायनिकआदानोंपरनिर्भरताकमकरनेमेंमददमिलतीहै।सरकारीअनुदान, प्रमाणनयोजनाएँऔरप्रोत्साहनकिसानोंकोजैविकखेतीकेतरीकोंकाउपयोगकरनेकेलिएप्रेरितकरसकतेहैं।
- ***जलसंरक्षणकेउपाय:***भारतमेंपानीकीकमीकोदेखतेहुए, ड्रिपसिंचाई, वर्षाजलसंचयनऔरजल-बचतउपायोंसहितप्रभावीसिंचाईविधियोंकासमर्थनकरकेजलसंसाधनोंकोसंरक्षितकियाजासकताहैऔरकृषिउत्पादनबढ़ायाजासकताहै।
- ***प्रौद्योगिकीकोअपनाना:***प्रौद्योगिकीकेउपयोगकोबढ़ावादेनेसेसंसाधनदक्षताअधिकतमहोसकतीहै, अपशिष्टकमहोसकताहैऔरपैदावारबढ़सकतीहै।इसतकनीककेउदाहरणोंमेंफसलनिगरानीकेलिएड्रोन, IoT-सक्षमउपकरणऔरसटीकखेतीशामिलहैं।रासायनिककीटनाशकोंपरअत्यधिकनिर्भरहुएबिनाबीमारियोंऔरकीटोंकेप्रबंधनकेलिएएकीकृतकीटप्रबंधन) आईपीएम (रणनीतियोंकेअनुप्रयोगकोप्रोत्साहितकरें।इसमेंजैविकनियंत्रणोंकाउपयोग, फसलविविधताऔरप्राकृतिकशिकारियोंकापरिचयशामिलहै।
- ***क्षमतानिर्माणऔरशिक्षा:***यदिकिसानोंकोप्रशिक्षण, कार्यशालाएंऔरसमकालीनकृषिविधियों, टिकाऊप्रथाओंऔरबाजारकेरुझानकेबारेमेंज्ञानमिलेतोवेबुद्धिमाननिर्णयलेनेमेंसक्षमहोसकतेहैं।
- ***वित्तीयसहायताऔरऋणसुविधाएं:***मध्यमकृषिकीओररुखकरनेवालेकिसानोंकोयदिऋणसुविधाओं, बीमापॉलिसियोंऔरटिकाऊआदानोंकेलिएसब्सिडीतकआसानपहुंचमिलतीहै, तोउनकीवित्तीयसीमाएंकमहोसकतीहैं।
- ***बुनियादीढांचेकाविकासऔरबाजारसंपर्क:***परिवहननेटवर्कमेंसुधार, कोल्डस्टोरेजसुविधाओंकानिर्माण, औरबाजारसंबंधोंकोमजबूतकरनेसेफसलकेबादकेनुकसानकोकमकरनेऔरटिकाऊकृषिकरनेवालेकिसानोंकेलिएउचितमूल्यकीगारंटीदेनेमेंमददमिलसकतीहै।
- ***नीतिगतसुधार:***मध्यमकृषिकोउननीतियोंकेकार्यान्वयनद्वारासमर्थितकियाजासकताहैजोटिकाऊकृषिप्रथाओंकोप्राथमिकतादेतेहैंऔरप्रोत्साहितकरतेहैं।इननीतियोंकेउदाहरणोंमेंमूल्यस्थिरीकरणउपाय, फसलबीमायोजनाएँऔरभूमिसुधारशामिलहैं।
- ***सामुदायिकभागीदारीऔरसूचनासाझाकरना:***किसानसहकारीसमितियों, पड़ोस-आधारितसमूहोंऔरसूचनासाझाकरनेकेलिएमंचोंकोबढ़ावादेकर, हमलोगोंकोअनुभवोंकाआदान-प्रदानकरकेऔर ज्ञानप्राप्तकरकेटिकाऊप्रथाओंकोअपनानेमेंमददकरसकतेहैं।
- ***कृषिवानिकीकासमर्थन:***कृषिवानिकीतकनीक, कृषिप्रणालियोंमेंवृक्षएकीकरण, औरवनीकरणपर्यावरणकीरक्षाकरने, मिट्टीकीउर्वरतामेंसुधारकरनेऔरकिसानोंकोविभिन्नप्रकारकेराजस्वस्रोतप्रदानकरनेमेंमददकरसकतेहैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः, आर्थिकविकासमेंभारतीयकृषिकेयोगदानसेइनकारनहींकियाजासकताहै, लेकिनयहयोगदानतभीतकरहेगाजबतकमध्यमऔरटिकाऊकृषिपद्धतियोंकाउपयोगकियाजातारहेगा।एकव्यापकरणनीतिविकसितकरनाजिसमेंसामुदायिकभागीदारी, नीतिसमर्थनऔरप्रौद्योगिकीनवाचारशामिलहो, भारतीयकृषिकोअधिकमजबूतऔरसफलभविष्यकीओरमार्गदर्शनकरनेकेलिएआवश्यकहै।इनअसमानताओंकोदूरकरनेकेप्रयासमें, सरकार, गैर-सरकारीसंगठनऔरव्यापारक्षेत्रकेसदस्यभारतीयकृषिकोआधुनिकबनानेकेलिएलक्षितप्रोग्रामर, सब्सिडीऔरपहलशुरूकररहेहैं।स्थायीसुधारोंकोबढ़ावादेनेऔरकृषकसमुदायमेंसुधारकेलिए, हितधारकोंकोमिलकरकामकरनाचाहिएऔरनिवेशऔरप्रयासजारीरखनाचाहिए।यहजरूरीहैकियेदृष्टिकोणएक-दूसरेकेसाथऔरसरकारीएजेंसियों, शैक्षणिकसंस्थानों, गैर-सरकारीसंगठनोंऔरकिसानोंजैसेहितधारकोंकेसाथमिलकरकामकरें।साथमिलकरकामकरके, हमभारतीयकृषिकोऔरअधिकटिकाऊबनासकतेहैं, जिसकेपरिणामस्वरूपआजीविका, खाद्यसुरक्षाऔरपर्यावरणसंरक्षणमेंसुधारहोगा।भारतीयकृषिकेलिएएकआकर्षकऔरटिकाऊभविष्यकीगारंटीकेलिए, पारिस्थितिकसंरक्षणऔरआर्थिकविकासकेबीचसंतुलनबनानाअनिवार्यहै।

संदर्भ सूची :

[1]. Pingali, P. (2012). Green Revolution: Impacts, limits, and the path ahead. Proceedings of the National Academy of Sciences, 109(31), 12302-12308.

[2]. Gulati, A., & Saini, S. (2017). Double jeopardy: Assessing the impact of climate change on Indian agriculture. Food Policy, 68, 103-114.

[3]. Shiva, V. (2000). The Violence of the Green Revolution: Third World Agriculture, Ecology, and Politics. Zed Books.

[4]. Swaminathan, M. S. (2016). Making Agriculture Sustainable and Profitable: Some Initiatives. Economic and Political Weekly, 51(48), 31-34.

[5]. Ghosh, M., & Chadha, G. K. (2016). Agricultural Growth Accounting and Total Factor Productivity in India. Agricultural Economics Research Review, 29(2), 241-250.

[6]. Ministry of Finance, Government of India. (2017). Economic Survey 2016-2017.

[7]. Gulati, A., & Saini, S. (2013). Agriculture and Food Security in India: A Perspective from 60 Years. Indian Journal of Agricultural Economics, 68(4), 532–550.

[8]. Bhalla, G. S., & Singh, G. (2005). Agriculture and Economic Development in India. Indian Journal of Agricultural Economics, 60(1), 1–16.

[9]. Birthal, P. S., Joshi, P. K., & Gulati, A. (2005). Diversification in Indian Agriculture towards High-Value Crops: The Role of Small Farmers. Agricultural Economics Research Review, 18(1), 1–14.

[10]. Shetty, S. L. (2017). Agricultural Growth and Development in India Since Independence: A Study on Progress, Performance, and Determinants. Indian Journal of Economics and Development, 13(1), 43–50.

[11]. Feder, G., & Umali, D. L. (1993). The Adoption of Agricultural Innovations: A Review. Technological Forecasting and Social Change, 43(3), 215–239.

[12]. Pretty, J., & Hine, R. (2001). Reducing food poverty with sustainable agriculture: a summary of new evidence. Final report from the SAFE-World Research Project, University of Essex.

[13]. Kulkarni, H., & Kamra, S. K. (2000). Water Management in India: Policy Issues and Initiatives. Economic and Political Weekly, 35(6), 433–440.

[14]. Pretty, J. (2008). Agricultural sustainability: concepts, principles, and evidence. Philosophical Transactions of the Royal Society B: Biological Sciences, 363(1491), 447–465.